आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:21-08-14

हम बच्चों को रचना के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान देकर, स्वदर्शन चक्रधारी बनाने वाले, रचयिता बाप ने कहा, मीठे बच्चे - बाप ने तुम्हें संगम पर जो स्मृतियॉ दिलाई हैं, उसका सिमरण करो तो सदा हर्षित रहेंगे.

बाबा ने अपने महावाक्यों द्वारा हमें अपनी रचना के राज का, ड्रामा का और आत्मा-परमात्मा का सारा ज्ञान दिया है. बाबा ने आज सारी मुरली में रचना के आदि-मध्य-अन्त कि कुछ बातों को याद दिलाकर हमें खूब हर्षित किया हैं और एक तरीक़े से हमें कैसे रचना को याद कर खुश होना सिखलाया है.

आज बाबा ने रचना की जो बातों की स्मृतियॉ हमें दिलाई है उसे एक बार फिर से याद करके स्वयं को हर्षित करेंगे.

- मीठे-मीठे रुहानी बच्चों को रुहानी बाप समझाते हैं - तुमको अब स्मृति आई है कि हम आदि सनातन देवी-देवता धर्म के थे, हम राज्य करते थे, हम बरोबर विश्व के मालिक थे. (याद करो अपने सुख के दिन)

- हमने ही सतयुग से लेकर जन्म लेते ८४ का चक्र पूरा किया. सारे झाड़ की स्मृति आई है. हम देवता थे फिर रावण राज्य में आ गये तो देवी-देवता कहलाने के लायक न रहे इसलिए धर्म ही दूसरा समझ लिया. हिन्दुओं को अपने धर्म का पता ही नहीं है कि हमारा हिन्दू धर्म कब से शुरू हुआ, किसने बनाया? (हमारे धर्म का राज जानने कि खुशी)

- अभी स्वयं रचयिता से हमें रचना के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान मिलता है, जिसे पढ़कर हमें राज्य-भाग्य मिलता है. फिर हमें रहने के लिए नई सृष्टि चाहिए. स्वयं रचयिता बाप आकर हमारे लिए पुरानी दुनिया का विनाश कर नई दुनिया स्थापन करते हैं. हमारे लिए विनाश जरूर होना है. कल्प-कल्पांतर हम यह पार्ट बजाते हैं. कल्प पहले भी बाबा से हमें बेहद सुख का राज्य भाग्य मिला था. (बाबा द्वारा हमारे लिए नये युग कि स्थापना कि खुशी)

- हरेक आत्मा को अपना-अपना पार्ट मिला हुआ है. हम आत्मा छोटी अविनाशी हैं, उनमें पार्ट भी अविनाशी है जो चलता ही रहेगा. यह बनी बनाई बन रही... इसमें नई बात कोई एंड वा कट नहीं हो सकती है. कोई भी मोक्ष को पा नहीं सकते. कोई मुक्ति मांगते है, मुक्ति अलग है, मोक्ष अलग है. यह भी अभी समझा है. (आत्मा और आत्मा का ड्रामा में पार्ट का राज जानने की खुशी)

- अभी हम मनुष्य से देवता बनने की पढ़ाई पढ़ रहे है. इसे पढ़कर फिरसे हम नई दुनिया में जायेंगे. यह है मृत्युलोक, यहॉ तो अचानक बैठे-बैठे मोत आ जाता है. उसका नाम ही है अमरलोक, वहॉ काया भी निरोगी रहेंगी. (यह स्मृति हमें शरीर छोड़ते समय भी खुशी देगी)

- इस जन्म के हमारे जितने भी पाप है वह सब अविनाशी सर्जन के आगे रख दिये और हल्के हो गये. बाकी जन्म-जन्मांतर के जो पाप है वह योग से खत्म कर रहे है. (इसे योग में उत्साह और खुशी रहती है)

- बाबा ने मनमनाभव का सही अर्थ समझाया है. मनमनाभव का अर्थ है अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो. यह है महान मंत्र, श्रीकृष्ण जैसा महान आत्मा बनने के लिए. (मनमनाभव का सही अर्थ समझकर उसे श्रेष्ठ फल प्राप्त करने की खुशी)

- भारत खंड में ही इतने देवी-देवताओं के मंदिर आदि है. यह भी खेल बना हुआ है जिसका वृतांत अब हम जानते है. शिवबाबा के भी कितने नाम, उनके अभी के कर्तव्य आधार पर रख दिये है और हर नाम पर अलग-अलग मंदिर बनाया है. भक्ति से हमने आधाकल्प सुख पाया है. लेकिन सतयुग-त्रेतायुग में भक्ति होती नहीं तो वहॉ मंदिर आदि कि दरकार नहीं है. अभी हमने जाना है कि आधाकल्प (द्वापर-कलियुग) भक्ति चलती है, बाकी आधाकल्प (सतयुग-त्रेतायुग) भक्ति का नाम-निशान नहीं. (भक्ति के राज को जानने कि खुशी)

आज की मुरली से ऐसे और बहुत सारी खुशीयॉ हम बटोर सकते है. याद रहे कि बाबा ने कहा है जितनी हम खुशी औरो को बाटेंगे उतनी और खुशी हमारे में भी बढ़ेगी. ॐ शांति.

Please provide your feedback to Atma Bhai on email: a.brahmin.soul@gmail.com .